अध्याय अनिवार्यताएँ

मसीही सिद्धान्त

अध्याय 1: हमें सिद्धान्त जानने की क्या जरूरत है?

जब पौलुस अपने पाठकों को अपने अंगीकार और उन शिक्षाओं को दृढ़ता से थामे रखने का निर्देश देता है जिन्हें उन्होंने पाया है (इब्रानियों 4:14 और 2 थिस्सलुनीकियों 2:15) तो यह स्पष्ट है कि उसका यह मानना है कि मसीहियों को एक अंगीकार को थामना होगा और उन्हें मूलभूत शिक्षाओं पर ध्यान देना होगा। जब हम 'सिद्धान्त' शब्द का प्रयोग करते हैं तो उससे हमारा मतलब यही है।

एक कहावत है कि लोग जब खुश होते हैं तो वे किसी विषय के बारे में अनजान रहना पसन्द करते हैं। वे कह सकते हैं, "अज्ञानता आनन्द है।" दुर्भाग्यवश, विश्वास के सिद्धान्तों के बारे में बहुत सारे मसीहियों का यही नजरिया है। क्या मसीहियों के लिए यह नजरिया सही है?

निःसन्देह मसीह के साथ हमारा संबंध हमारे विश्वास के स्वास्थ्य के लिए सर्वोपरि है परन्तु हमारे संबंध का आधार उन बातों के द्वारा बनता है जिन्हें हम उसके (या स्वयं) के बारे में सत्य मानते हैं। परमेश्वर के बारे में और वह जो कहता है उसके बारे में यह समझ या विश्वास– यह सिद्धान्त– सम्पूर्ण मसीही जीवन के लिए मूलभूत है।

परन्तु अनिवार्य सिद्धान्त वे हैं जिन पर सच्ची मसीही कलीसिया आधारित है। ये सिद्धान्त ही मसीहियत को दूसरे धर्मों से अलग और विशेष बनाते हैं।

मसीही विश्वास में कुछ लोगों के बीच में एक परेशान करने वाली रीति है। एक आन्दोलन है जो कहता है कि मसीहियों को सिद्धान्त या 'धर्म' की बजाय केवल 'संबंध' के बारे में चिन्ता करनी चाहिए। अच्छे इरादों वाले लोग कहते हैं कि इसका अर्थ यह है कि वे चाहते हैं कि उनके धर्म का संबंध केवल परमेश्वर के साथ रिश्ते के बारे में हो और वे धर्म के तथ्यों में उलझने की बजाय अपने जीवन के द्वारा केवल यीशु के पीछे चलना चाहते हैं।

समस्या यह है कि चाहे व्यक्ति अपने विश्वास (या उसके अभाव) का वर्गीकरण कैसे भी करे, प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार के सिद्धान्त को मानता है। किसी भी बात पर विश्वास न करना असंभव है। निःसन्देह मसीह के साथ हमारा संबंध हमारे विश्वास के स्वास्थ्य के लिए सर्वोपरि है परन्तु हमारे संबंध का आधार उन बातों के द्वारा बनता है जिन्हें हम उसके (या स्वयं) के बारे में सत्य मानते हैं। परमेश्वर के बारे में और वह जो कहता है उसके बारे में यह समझ या विश्वास– यह सिद्धान्त– सम्पूर्ण मसीही जीवन के लिए मूलभूत है। इसलिए यह आवश्यक है कि विश्वासी सत्य मसीही सिद्धान्तों पर विश्वास करने के द्वारा यह सुनिश्चित करें कि उन्होंने सच्चे मसीही विश्वास को थाम रखा है।

यह विवादास्पद हो सकता है क्योंकि मसीही विश्वास के कुछ सिद्धान्त गुटबाजी उत्पन्न करते हैं। उदाहरण के लिए, अन्त के समय के बारे में विचार, बपतिस्मा, और संगीत की शैलियाँ आदि एक कलीसिया को विभाजित कर सकते हैं। इस प्रकार के सिद्धान्त जिन्हें विशिष्टता या स्पष्टता से बाइबल में नहीं बताया गया है, उन्हें सतही सिद्धान्त कहा जाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि उनका कोई महत्व नहीं है: इसका मतलब केवल यह है कि इन मामलों में अलग–अलग राय होने पर भी विश्वासी सच्ची मसीही कलीसिया के भाग हो सकते हैं।

परन्तु अनिवार्य सिद्धान्त वे हैं जिन पर सच्ची मसीही कलीसिया आधारित है। ये सिद्धान्त ही मसीहियत को दूसरे धर्मों से अलग और विशेष बनाते हैं। जैसे त्रिएकता, परमेश्वर के वचन की अचूकता और मसीह की सर्वोच्चता आदि सिद्धान्त ऐसे पूर्ण सत्य हैं जिन पर विश्वास करना मसीह पर विश्वास करने का दावा करने वाले सब लोगों के लिए आवश्यक है।

अब, कुछ लोग कह सकते हैं कि फिर भी वे सिद्धान्त में उलझने की बजाय यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ अपने प्रेमी संबंध पर ध्यान केन्द्रित करना चाहते हैं। परन्तु, इस बात को कहते समय भी वह व्यक्ति कई सिद्धान्तों पर निर्भर है! इस कथन का यह मानना है कि एक परमेश्वर है जिसके साथ संबंध रखने की इच्छा हमारे अन्दर होनी चाहिए, किसी समस्या के कारण उस संबंध में बाधा आई, और यीशु मसीह उस समस्या को सुलझा सकता है। उस व्यक्ति के लिए अगला कदम इस पर विचार करना होगा कि वे उस संबंध को कैसे आगे बढ़ाएँगे, उन्हें यह जानकारी कहाँ से मिलेगी कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए क्या आवश्यक है, और उन्हें कैसे पता चलेगा कि परमेश्वर उनसे क्या चाहता है। ये सारे विवरण उस व्यक्ति के सैद्धान्तिक विश्वास के भाग हैं। उदाहरण के लिए, यदि यह व्यक्ति बाइबल की अचूकता को अनदेखा करने का निर्णय लेता है तो

उसे परमेश्वर का प्रसन्न करने के अपने स्वयं के तरीके को खोजने के लिए जूझना पड़ेगा जो उसे गलत जीवनशैली या परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में असुरक्षा की भावना की ओर ले जा सकता है।

आइए हम सिद्धान्त के अध्ययन और सही सिद्धान्त को थामे रखने की तुलना सावधानी से एक भवन की नींव डालने से करते हैं। यदि नींव में एक पत्थन टेढ़ा है तो पूरी इमारत पर संकट आ जाएगा। ऐसा ही हमारे विश्वास के साथ है। सैद्धान्तिक आधार सत्य और ठोस एवं दृढ़ता से ज्ञात होने चाहिए ताकि हमारे विश्वास का भवन सत्य और ठोस हो। (देखें, मत्ती 7:24–27) यह तो साफ है कि हम यीशु मसीह की नींव पर बनाते हैं परन्तु उसके बारे में आप क्या कहेंगे? उसने कहा कि यदि हम उसके वचनों को सुनते हैं और उसकी बातों को मानते हैं तो हमारा निर्माण अच्छा होगा। क्या यह सुनने में सिद्धान्त को मानने जैसा नहीं लगता है? बहुत सारे लोग अपने विश्वासों में लापरवाह हो जाते हैं और अपने सैद्धान्तिक झुकावों को परमेश्वर के वचन की बजाय संस्कृति से प्रभावित होने देते हैं। जब ऐसा होता है तो मसीही सिद्धान्त बदल जाते हैं या उन्हें अनदेखा किया जाता है और कलीसिया सच्ची मसीही कलीसिया नहीं रहती है।

यह निर्णायक है कि हम सिद्धान्त का अध्ययन करने के लिए समय निकालें और उसके अनुसार जीवन बिताते समय नम्र परन्तु दृढ़ बने रहें। एक सच्ची मसीही कलीसिया में अनिवार्य सिद्धान्तों पर सहमति होनी चाहिए। सतही सिद्धान्तों को नम्रता के साथ मानना और अनुग्रह के साथ सिखाया जाना चाहिए। मसीह की देह के रूप में हम कुछ बिन्दुओं पर असहमत होने के लिए स्वतंत्र हैं परन्तु हम उन सतही सिद्धान्तों के बारे में हम से अलग विश्वास रखने वाले किसी व्यक्ति को तुच्छ जानने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं। कुछ सिद्धान्तों के विवादास्पद या दुविधापूर्ण होने का तथ्य उनके अध्ययन न करने का बहाना नहीं है। परमेश्वर को जातियों पर प्रकट करने के लिए आपको वास्तव में परमेश्वर को जानना चाहिए। अतः, गहन अध्ययन करें और मसीही विश्वास के सिद्धान्तों पर एक शिक्षित राय बनाएँ।

यह निर्णायक है कि हम सिद्धान्त का अध्ययन करने के लिए समय निकालें और उसके अनुसार जीवन बिताते समय नम्र परन्तु दृढ़ बने रहें। एक सच्ची मसीही कलीसिया में अनिवार्य सिद्धान्तों पर सहमति होनी चाहिए। सतही सिद्धान्तों को नम्रता के साथ मानना और अनुग्रह के साथ सिखाया जाना चाहिए।

एक नजर में

- प्रत्येक व्यक्ति का कोई न कोई विश्वास होता है। मसीहियों के रूप में यह आवश्यक है कि हम बाइबल पर विश्वास करें। सिद्धान्त का अध्ययन करना 'सूखे धर्म' के समान नहीं है। यह वास्तव में उस परमेश्वर को जानना है जिसके साथ हमारा एक संबंध है।

- एक सच्ची मसीही कलीसिया बनी रहने के लिए अनिवार्य सिद्धान्तों को दृढ़ता से थामना आवश्यक है। सतही सिद्धान्तों पर विश्वासियों के बीच असहमति हो सकती है परन्तु उनके कारण कलह या विभाजन नहीं होना चाहिए। मसीहियों को सिद्धान्त की अपनी चर्चा में नम्र और कृपालु रहना चाहिए।

- यदि हम स्वयं वास्तव में परमेश्वर को नहीं जानते हैं तो हमारे लिए उसे जातियों पर प्रकट करना असंभव है। सिद्धान्त के अध्ययन से ही हमें वास्तव में मसीह की जानकारी मिलती है और यह पता चलता है कि उसकी कलीसिया के रूप में हमें कैसे सच्चाई कार्य करना चाहिए।

- सिद्धान्त के जटिल या विवादास्पद होने के तथ्य के कारण हमें उसके अध्ययन से छूट नहीं मिलती है। हमारे लिए विश्वास के सच्चे अंगीकार को थामे रखना आवश्यक है ताकि हम पर संस्कृति का नकारात्मक प्रभाव न पड़े।

आपका विचार

- क्या आप अनिवार्य और सतही सिद्धान्तों के बीच अन्तर जानते हैं? क्या कुछ ऐसे अनिवार्य सिद्धान्त हैं जिनके साथ सहमत होना आपके लिए कठिन है? क्या कुछ ऐसे सतही सिद्धान्त हैं जिन्हें आपने अत्यधिक दृढ़ता से थाम रखा है? नम्रता से परमेश्वर के वचन के अधीन रहने और परमेश्वर के लोगों के साथ कृपा का व्यवहार करने में समर्थ होने के लिए प्रार्थना करें और बुद्धि माँगें।

- क्या आप 'परमेश्वर के साथ संबंध' का प्रयोग सिद्धान्त का अध्ययन करने के कठिन परिश्रम से बचने के लिए बहाने के रूप में कर रहे हैं? प्रभु से कहें कि वह सैद्धान्तिक शिक्षा को प्रभु को और अधिक जानने और उसके प्रति आपके प्रेम को और अधिक बढ़ाने के मार्ग के रूप में देखने में आपकी सहायता करे।

- सही सिद्धान्त को सीखने में आपकी सहायता करने के लिए आपके पास कौन से स्रोत और लोग उपलब्ध हैं? जिस सत्य को आप जानते हैं उसमें स्वयं को दृढ़ता से स्थापित करने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing